यज्ञस्य प्राविता भव। (ऋ.-3.21.3) तू यज्ञ का रक्षक बन।

येन सदनुष्ठानेन सम्पूर्णविश्वं कल्याणं भवेदाध्यत्मिकाधि-दैविकाधिभौतिकतापत्रयोन्मूलनं सुकरं स्यात् तत् यज्ञपदाभिधेयम्

जिस सदनुष्ठान से सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो तथा आध्यात्मिक-आधि दैविक-आधिभौतिक तीनों तापों का उन्मूलन सरल हो, उसे यज्ञ कहते हैं।

लो हवन में श्वास गहरा। सुखमय जीवन हो सुनहरा॥